ISSN : 2347-503X

Research Chronicler

International Multidisciplinary Research Journal

Vol II Issue III : March 2014

Editor-In-Chief

Prof. K. N. Shelke

www.research-chronicler.com

Research Chronicler

A Peer-Reviewed Refereed and Indexed International Multidisciplinary Research Journal

Volume II Issue III: March – 2014

CONTENTS

Sr. No.	Author	Title of the Paper	Page No.
1	Dr. Jeyaseelan Gnanaseelan	A Corpus Analysis of the Prepositions used in Letter Writing in English	**01**
2	Abolfazl Ramazani & Sima Sharbaz	Dialogic Voices in T. S. Eliot's The Waste Land	**16**
3	Dr. Shamala Ratnakar	Multicultural Identity and Immigrant Tradition in Rohinton Mistry's *Squatter*	**35**
4	Shachi Sood & Dr. Vandhana Sharma	The Woman in the Body: Locating the Individuality within Patriarchy in Dattani's Thirty Days in September and Ek Alag Mausam	**41**
5	R. Saradha	From a Marginalist Vacuum towards a Nominalist Continuum: A study of Shoban Bantwal's *The Dowry Bride*	**48**
6	Dr. M. Lavanya & Prof. Dr. R. Ganesan	Perceived Physical and Psychological Stress among Higher Secondary School Students: A Pilot Study	**57**
7	Dr. Shivaji Sargar & Prof. Shivaji Kalwale	Allusiveness in the Poetry of T.S. Eliot with special reference to *The Waste Land*	**65**
8	Dr. R. R. Thorat	Use of Mythical Symbols in Raja Rao's *Kanthapura*	**71**
9	Dr. Pooja Singh & Dr. Archana	Glam to Sham: Woman's Innate Desire for Commitment	**77**
10	Dr. Sudhendu Giri	Modern Entrepreneurial Spirit in an Urbanised Economy	**88**
11	Ali Arian	The Elements of Humanity and Sufism in Henry David Thoreau's *Walden*	**105**
12	Tania Mary Vivera	Mindscaping Oskar Schell: Mental Spaces and Conceptual Blending in *Extremely Loud and Incredibly Close*	**111**
13	Mr. Chaitanya V. Mahamuni	Digital Video Watermarking Using DWT and PCA in Encrypted Domain	**118**
14	Dr. Aruna	Behaviour of Consumers Regarding Electronic Goods in Pune Region	**129**
15	B. Moses	Syntax and Semantic Problems in Translating Indira Parthasarathy's *Helicoptergal Keezhe Irangi Vittana* into English	**134**

16	Dr. Yogesh Jain	Mutual Funds & Other Financial Instruments: A Study of Customer Behaviour with special reference to Udaipur	**138**
17	Dr. S. Karthikkumar	Feminism vs. Humanism in Anita Rau Badami's*The Hero's Walk*	**152**
18	Dr. Shivani Jha	Ecocriticism and Ecocritical Interpretations of Selected Recent Indian Writings in English	**156**
19	Abu Siddik	Vivekananda's Vision of Religion: A Brief Survey of Hinduism and Islam	**163**
20	S.A. Thameemul Ansari	Best Practices in ELT: A Need for Reflection in the English Classroom	**169**
21	S. Rajeswari	The Big Heart: Conflict between Tradition and Modernity	**176**
22	Prof. Arvindkumar A. Kamble	Western Women in Oscar Wilde's 'The Importance of Being Earnest'	**185**
23	Prabal J. Roddannavar	The Representation of Hatred in *The Bluest Eye*	**188**
24	Prof. Divya Chansoria & Mr. Umakant Gajbir	Democracy, Human Rights and Its Implementation	**193**
25	Mr. Chandan Bharti Mishra	An Analysis of Habitat Fragmentation and Recent Bottlenecks Influence	**197**
26	Dr. Shilpa Mishra	The Politics of HRM in India	**202**
27	Megha Katoria	Representation or Misrepresentation: Image of Women in Media	**210**
28	Dr. Ram Kalap Tiwari	Role of Spiritual Activities to Strengthen Mental Health and Well Being of Adolescents	**215**
29	Chintan V. Pandya, Jignasu P. Mehta, Aditee J. Jadeja & B. A. Golakiya	Antifungal Activity of Crude Extract of *Butea Monosperma*	**226**
30	Dr. Jaydeep Singh Dangi	*Computer par Hindi Suchana Praudyogikike Vikasmein Badha Nahin Balki Vikas Hain*	**230**
31	Angela Sadeghi Tehrani	A Rebellion through Confession – A Note on the Confessional Tone of the Poems of Kamala Das and Forough Farrokhzad	**233**
32	Dr. Riktesh Srivastava	Analysis of n-Tier Electronic Commerce Architecture Using Different Queuing Models	**239**
33	Nima Shakouri	Revisiting the Role of Gender in the Use of Language Learning Strategies: A Poststructuralist Look	**247**
34	Shahnawaz Ahmad Mantoo	Geo-strategic Importance of Bangladesh in Contemporary South Asia: An Analysis of Bangladesh-US Partnership	**255**
35	Ashish Kumar	Social Entrepreneurships in India: An Exploratory Study	**261**

कंप्यूटर पर 'हिंदी' सूचना प्रौद्योगिकी के विकास में बाधा नहीं बल्कि खूबी है

जगदीप सिंह
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, भारत

पीपुल लिंग्विस्टिक सर्वे के अनुसार भारत में 780 भाषाएँ बोली जाती हैं तथा भारतीय संविधान में मान्यता प्राप्त भाषाओं की संख्या 22 है। हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ देश में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। चीनी भाषा के बाद यह विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इसकी लिपि देवनागरी है। वर्तमान में हमारे देश की कुल जनसंख्या में से 65 प्रतिशत लोग हिंदी भाषा को जानने व समझने वाले हैं। मात्र 5 प्रतिशत लोग अँग्रेज़ी भाषा को जानते व समझते हैं; शेष 30 प्रतिशत में गैर हिंदी और अँग्रेज़ी भाषी लोग यानी के तमिल, तेलुगू आदि भाषा को जानने वाले हैं।

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है और सूचना प्रौद्योगिकी का मूल वाहक 'कंप्यूटर' है। कंप्यूटर के बिना सूचना प्रौद्योगिकी के किसी भी रूप की कल्पना अधूरी ही होगी। यह सूचना प्रौद्योगिकी की ही देन है कि आज समूचे विश्व में सूचनाओं का संकलन और उनका आदान-प्रदान अत्यंत सुगम हो पाया है। परंतु हमारे देश भारत के अधिकांश भागों में हिंदी बोली, पढ़ी तथा समझी जाती है वहाँ कंप्यूटर पर अँग्रेज़ी भाषा की वजह से उसका समग्र उपयोग एक अड़चन है। चूँकि कंप्यूटर के उपयोग में दिक्कत अँग्रेज़ी भाषा की वजह से आती है न कि तकनीक की वजह से। परंतु आज भी अधिकांशतः कंप्यूटर की तकनीक और उसके सॉफ़्टवेयर अँग्रेज़ी भाषा में ही उपलब्ध हैं, जोकि राष्ट्र की समग्र उन्नति में बाधक है। स्पष्ट है कि:- **"कोई भी राष्ट्र अपनी 'मातृ-भाषा' को पूर्णतः सार्वभौमिक बनाए बिना उन्नति नहीं कर सकता है। यदि तकनीकी आम नागरिक तक जन उपयोगी बनाना है; तो उसे आम जन की अपनी निज भाषा में ही विकसित करना आवश्यक होगा।"** हम देख सकते हैं कि जिन राष्ट्रों में तकनीकी एवं संबंधित सॉफ़्टवेयर विकास कार्य उनकी ही अपनी भाषा में हुआ है आज वही राष्ट्र हम से कहीं ज़्यादा सफल और संपन्न हैं। चीन, जापान आदि राष्ट्र इसके उदाहरण हैं।

कोई भी 'भाषा' सूचना प्रौद्योगिकी के लिए कच्चा माल की तरह ही होती है और इसका उपयोग ज्ञान प्रसार के अलावा औद्योगिक मुनाफ़े के लिए भी किया जा सकता है। चूँकि सूचना प्रौद्योगिकी आज के दौर की मुख्य प्रौद्योगिकी है और इसके दायरे में अधिकाधिक भारतीय भाषाओं का उपयोग किया जाए तो इस क्षेत्र में अधिक मुनाफ़ा भी कमाया जा सकता है। आज यही समय है कि विभिन्न भारतीय भाषाओं में कंप्यूटिंग का विस्तार कर ज़्यादा से ज़्यादा ज्ञान का विस्तार किया जा सकता है और साथ ही वाणिज्यिक लाभ के जरिए देश के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान भी किया जा सकता है। यदि हमने ऐसा नहीं किया तो यही काम बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ करेंगी और बेहद मुनाफ़ा कमाएँगी जैसा कि अभी तक कमाती भी आई हैं। अतः 'हिंदी' कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के लिए बाधा नहीं बल्कि खूबी होना चाहिए।

प्रारंभ में कंप्यूटर एवं उस पर आधारित तकनीकी

विदेश से आई थी इसलिए उस पर काम-काज अँग्रेज़ी भाषा पर ही आधारित थे और हमें अँग्रेज़ी भाषा सीखना ज़रूरी हो गया था । लेकिन ऐसा भी नहीं है कि सॉफ़्टवेयर सिर्फ़ अँग्रेज़ी भाषा के ही होते हैं! चूँकि कंप्यूटर का प्राथमिक उद्गम व विकास उन राष्ट्रों से हुआ जहाँ की प्रचलित लिपि रोमन और भाषा अँग्रेज़ी थी। इसलिए उन तमाम वैज्ञानिकों ने जिन्होंने वहाँ पर कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर का विकास कार्य किया उनकी अपनी लिपि रोमन (अँग्रेज़ी भाषा) में ही किया। इसके बाद हमारे देश में कंप्यूटर और सॉफ़्टवेयर का आयात भी उन्हीं राष्ट्रों से किया गया; फलस्वरूप परिणाम यह हुआ कि हमें कंप्यूटर एवं सॉफ़्टवेयर उन्हीं राष्ट्रों की भाषा (अँग्रेज़ी) एवं लिपि (रोमन) में ही उपलब्ध हुए; जिसे देश के उच्च शिक्षित वर्ग यानी के अँग्रेज़ी भाषा के जानकार लोगों ने बगैर किसी भाषाई कठिनाई के उपयोग में लाया, लेकिन उस समय का आम हिंदी भाषी उसके उपयोग से बहुत दूर रहा। और अँग्रेज़ी भाषा की वजह से कंप्यूटर हिंदी भाषियों को कठिन लगने लगा। बात सीधी सी है यदि यही कंप्यूटर एवं सॉफ़्टवेयर का प्रारंभिक विकास कार्य हमारे अपने देश में हुआ होता तो निश्चित ही वह हमारी अपनी लिपि देवनागरी एवं हिंदी भाषा में ही हुआ होता और आज देश में कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं की तादाद भी बहुत अधिक होती!

क्योंकि कंप्यूटर तंत्र के संदर्भ में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास सैद्धांतिक रूप से लिपि या भाषा-परक नहीं है। इसलिए रोमन लिपि (अँग्रेज़ी भाषा) में जो संभव है, वह देवनागरी लिपि (हिंदी भाषा) में भी संभव था और संभव है। क्योंकि "कंप्यूटर सिर्फ़ बाइनरी (अप्राकृतिक भाषा अर्थात मशीनी-भाषा) समझता है यानी 0 और 1 की द्वि-अंकीय भाषा अर्थात किसी भी भाषा को कंप्यूटर अपने तरीके से समझता है, लिहाज़ा कंप्यूटर पर जो काम अँग्रेज़ी या किसी अन्य दूसरी भाषा में हो सकता है, वही काम हिंदी में भी बख़ूबी हो सकता है। उसे बस हिंदी में प्रोग्राम किए जाने की ज़रूरत होती है।"

हिंदी भाषा का व्याकरण एवं इसकी लिपि (देवनागरी) का अपना वैज्ञानिक आधार है इसलिए देवनागरी लिपि कंप्यूटर तंत्र की प्रक्रिया के लिए पूर्ण रूप से अनुकूल है। देवनागरी लिपि को कंप्यूटेशनल भाषा में बदलने की अपार संभावनाएँ हैं तथा इसके माध्यम से विलुप्त होती अन्य भारतीय भाषाओं का भी संरक्षण संभव है। इस लिपि में विश्व की किसी भी भाषा एवं ध्वनि का लिप्याँकन आसानी से किया जा सकता है। देवनागरी में पर्याप्त वर्णों (52 वर्ण) की उपलब्धता है जो कि रोमन वर्णों (26 वर्ण) से संख्या में दोगुने हैं। देवनागरी में पर्याप्त वर्णों की उपलब्धता ही इसे श्रेष्ठ लिपि बनाती है। उदाहरण के लिए रोमन में हम हिंदी के वर्ण 'ट' एवं 'त' के लिए 't' वर्ण, 'थ' एवं 'ठ' के लिए 'th' वर्णों आदि का प्रयोग करते हैं; तो इस स्थिति में हम रोमन वर्ण 't' से देवनागरी वर्ण की सही ध्वनि 'ट' है या कि 'त' है, इसी प्रकार रोमन वर्णों 'th' से देवनागरी वर्ण की सही ध्वनि 'थ' है या कि 'ठ' है आदि के लिए प्रायः भ्रम की स्थिति में रहते हैं। परंतु इस प्रकार के भ्रम की कोई भी गुंजाइश देवनागरी लिपि के प्रयोग में नहीं है। इसलिए यह लिपि अन्य सभी लिपियों से अधिक वैज्ञानिक एवं श्रेष्ठ है यह विश्व लिपि के रूप में भी स्थापित होने की अपनी क्षमता रखती है।

इन्हीं खूबियों के कारण कंप्यूटर पर हिंदी भाषा में सॉफ़्टवेयर का विकास कार्य अधिक होने लगा है।

और विभिन्न विषयों की जानकारी वेबसाइटों पर अपनी हिंदी भाषा में देवनागरी लिपि में प्राप्त होने लगी है। परंतु प्रारंभ में हिंदी के अनेक प्रकार के फ़ॉन्ट होने की वजह से हिंदी के प्रयोग में जैसे कि ई-मेल, इंटरनेट सर्चिंग आदि में अड़चन होती थी लेकिन यूनिकोड फ़ॉन्टों के विकास से फ़ॉन्टों की समस्या दूर हुई। कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर कार्यक्रम के अंतर्गत यूनिकोड प्रत्येक वर्ण के लिए एक विशेष कूट संख्या प्रदान करता है। चाहे कोई भी प्लेटफ़ॉर्म हो (कंप्यूटर ऑपरेटिंग सिस्टम), चाहे कोई भी प्रोग्राम हो (कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर), चाहे कोई भी भाषा हो (प्राकृतिक भाषा) । यूनिकोड फ़ॉन्ट की मदद से हम आसानी से सॉफ़्टवेयर उपकरणों का इंटरफ़ेस, कमाँड्स, निर्देश, संकेत, संदेश, पाठ आदि अपनी निज भाषा हिंदी में विकसित कर सकते हैं। और इसी वजह से आज विश्वस्तर के अनेक सॉफ़्टवेयर हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में विकसित होने लगे हैं। जिससे वर्तमान में मोबाइल, टी.वी., टैबलेट आदि का उपयोग हिंदी भाषा में होने लगा है। और आज करोड़ों उपयोगकर्ता सिर्फ़ इसलिए बड़े हैं क्योंकि इन उपकरणों के सॉफ़्टवेयर हिंदी भाषा (देवनागरी-लिपि) में बनने लगे हैं। और इससे हिंदी भाषा को विस्तार मिला है और कंप्यूटर पर हिंदी स्थापित होने से हिंदी के ब्लॉगों की संख्या बड़ी जिससे विश्व के अनेक हिस्सों से हिंदी में ब्लॉगों का आदान प्रदान होने लगा और विश्व में एक नया हिंदी भाषी समुदाय पनपने लगा। इसके साथ-साथ ही सोशल मीडिया पर भी हिंदी का जादू छाने लगा। कंप्यूटर के हिंदीकरण होने से संसार की अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पादों के विज्ञापन हिंदी भाषा में जारी करने लगीं और विश्व के अनेक व्यवसायी व्यक्तियों को हिंदी जानने और सीखने की आवश्यकता पड़ने लगी। हमारी हिंदी फ़िल्मों की लोकप्रियता ने भी हिंदी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इससे विदेशियों में भी हिंदी सीखने की रूचि बड़ी है।

फिर भी यह आवश्यक है कि हम हिंदी एवं उस पर आधारित अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में प्रौद्योगिकी उत्पादन के लिए अभियान चलाएँ। तकनीकी क्षेत्र बड़ा विशाल है, इसकी किसी भी एक शाखा से जुड़कर इस विशाल वट-वृक्ष को मापा जा सकता है। आज सूक्ष्मतम जानकारी से लेकर विशाल जानकारी इंटरनेट के माध्यम से कंप्यूटर पर उपलब्ध है। जिसका उपयोग कर व्यक्ति इसका लाभ उठाने लालायित है, पर इसकी सबसे बड़ी बाधा है भाषा की समझ। आज इंटरनेट की लगभग 80 प्रतिशत सामग्री अँग्रेज़ी में ही उपलब्ध है। हमारे देश में हज़ारों लाखों नागरिक हैं जो कि सफल व्यापारी, दुकानदार, किसान, कारीगर (मिस्त्री), शिक्षक आदि हैं; यह सभी अपने-अपने कार्य क्षेत्र में कुशल एवं विद्वान हैं, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि यह सब अँग्रेज़ी भाषा के जानकार भी हों। ग्रामीण परिवेश में रहने वाले कृषक, कारीगर जो कि इस देश की उन्नति का मूल आधार हैं, यदि इन्हें और अच्छी तकनीकी की जानकारी अपनी ही निज भाषा हिंदी में मिले तो सोने पे सुहागा होगा! अतः हमें हिंदी के और अधिक प्रचार प्रसार एवं विस्तार के लिए ज़्यादा से ज़्यादा हिंदी ई-सामग्री को इंटरनेट पर स्थापित करने हेतु कार्य करने की जरूरत है। ताकि इंटरनेट पर हिंदी सामग्री का प्रतिशत और बड़ सके तथा तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी एक समृद्ध विशाल वट वृक्ष के रूप में परिवर्तित होते हुए विश्व-पटल पर पूर्णरूप से स्थापित हो सके।